ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(1): 22-25
www.allresearchjournal.com
Received: 02-12-2023
Accepted: 06-01-2023

पूजा
बी. एस. सी., एम.एड. (नेट., जे. आर. एफ.), शिक्षा विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
पूजा
बी. एस. सी., एम.एड. (नेट., जे. आर. एफ.), शिक्षा विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत

ग्रामीण क्षेत्र में 10वीं कक्षा के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन

पूजा

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2024.v10.i1a.11472

सारांश
ग्रामीण क्षेत्रों में पहले लड़के, लड़कियों में शिक्षा का अभाव पाया जाता था। आज जैसे तसै वे दसवीं या कुछ गांवों में सैकण्डरी स्कूल होने से वे बाहरवीं की शिक्षा तो प्राप्त करने लगे हैं लेकिन फिर भी कुछ गांवों में सिर्फ माध्यमिक विद्यालय होने से उच्च शिक्षा का अभाव पाया जाता है। इसी कारण उनकी शैक्षिक रूचियों का प्रश्न इतना अधिक नहीं होता। ग्रामीण वर्ग के अधिकतर लागे अनपढ़ होने के कारण लड़की को आश्रित तथा बोझ समझते हैं। वे लड़की को पराया धन समझते है। इसीलिए लड़कियों को गांव से बाहर भेजकर पढ़ाने से डरते है। यदि उन्हें थोड़ा बहुत पढ़ाते भी है तो सिर्फ इस मकसद के लिए कि वह पत्र व्यवहार ही कर सके या फिर लड़कियों को सिलाई कढ़ाई के व्यवसाय से सम्बन्धित शिक्षा तक ही सीमित कर दिया जाता है। इसके विपरीत लड़कों की शिक्षा को फिर भी आर्थिक कठिनाईयों के रहते हुए भी आगे बढ़ा दिया जाता है। उनकी पढ़ाई को आगे बढ़ा ने के लिए उन्हें शहरों में भी भेज दिया जाता है। इसलिए उनका जीवन उच्चता की ओर बढ़ जाता है।

कूटशब्द : शैक्षिक रूचि, शिक्षा, ग्रामीण शिक्षा, शहरी शिक्षा।

प्रस्तावना
ग्रामीण लोग अशिक्षित होने के कारण कृषि को अधिक महत्त्व देते हैं। इसलिए वे अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में न रखकर गांव में ही पढ़ाने की कोशिश करते हैं। यदि कुछ माँ, बाप पढ़े लिखे हो भी तो उनके रूढ़िवादी विचार उन्हें आगे बढ़ने से रोकते हैं। बच्चों की शिक्षण सम्बन्धी रूचि परिवार के माहौल से भी प्रभावित होती है। माता–पिता का सामाजिक आर्थिक विकास, रहन–सहन ग्रामीण बच्चों की शैक्षिक रूचियों पर प्रभाव डालता है। वह कौन–कौन से विषय है जिन्हें ग्रामीण प्राथमिकता देते हैं तथा ग्रामीण क्षेत्र के किशोर एवं किशोरियां किन विषय में रूचि लेते हैं। जो उनके विकास और अविकास को प्रभावित करती है। इसके साथ ही गांव के अध्यापक वर्ग भी इसके लिए उत्तरदायी होता है। गांव के अध्यापको की विचारधारा वर्ग निम्न स्तर को होती है। क्योंकि वे तो नौकरी को सिर्फ आय का साधन समझते हैं और बच्चों से अपने आवश्यकता के अनुरूप दूध, लस्सी, मक्खन इत्यादि मंगवाते हैं और उन्हें पास करके अगली कक्षा में कर देते हैं। इसी कारण भी बच्चों की पढ़ाई के प्रति रूझान कम हो जाता है। वे अपने पैतृक व्यवसाय में माता–पिता का हाथ बढ़ाते हैं। प्रत्येक छात्रा एवं छात्राओं की मानसिक योग्यता में विभिन्नता पाई जाती है। इसके कारण ही वे एक अवधि में विभिन्न विषयों और कुशलताओं में विभिन्न सीमाओं तक प्रगति करते हैं। उनकी प्रगति उनकी उपलब्धि कहलाती है। उपलब्धि से भावपूर्ण करना या काम में सफलता है। ग्रामीण क्षेत्रों का सामाजिक वातावरण भी रूढ़िवादी होता है। जो बच्चों की शिक्षा के विकास में बाधा बनता है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि ग्रामीण बच्चों की शिक्षा के प्रति कम रूचि होती है। आज ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार द्वारा बच्चों को शिक्षा सुविधाएं दी जा रही है। पहली से आठवीं तक सभी राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा उपलब्ध है। नौवी–दसवीं के बच्चों को क्रमशः 500 से 1000 रूपयों की दर से योग्यता छात्रावृत्ति भेजी जाती है। ये छात्रावृत्तियां इस विचार से भी दी जाती है कि ग्रामीण बच्चे अपनी रूचियों के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकें।
शोधाथी ने अपने शोध के लिए रोहतक क्षेत्र के दो विद्यालयों का चयन किया गया है जिसमें गर्वमेंट गर्ल्ज सीनियर सैकण्डरी स्कूल और राजकीय हाई स्कूल, गढ़ी बोहर को चुना गया है। ग्रामीण छात्रों की संख्या 75 और छात्राओं की संख्या भी 75 है। केवल उन्हीं विद्यालयों का चयन किया गया जहां से प्रदत्तों का संग्रह करने में विद्यार्थियों और अध्यापकों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हो सके। इसी सुविधा

को ध्यान में रखकर गढ़ी बोहर के स्कूलों का चयन किया गया है। यद्यपि न्यायदर्श का चुनाव रेंडम न्यायदर्श द्वारा किया गया है। मानवीय विकास के क्षेत्र में शिक्षा की आधारभूत भूमिका है। शिक्षा मानव विकास की आधारशिला है यह मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। भारत की तरह विश्व की अन्य प्राचीन सभ्यताओं में भी प्रारम्भ से ही शिक्षा को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है। अरस्तु ने लिखा था, ''शिक्षित व्यक्ति अशिक्षित व्यक्तियों से उतने ही श्रेष्ठ होते हैं जितने जीवित मृतकों से ''शिक्षा मानव की अमूल्य वस्तु है। शिक्षा समाज और मानव की आत्मा है और उसके विकास में सहायक है। यदि समाज मानव का दर्पण है तो मानव शिक्षा का दर्पण है। राष्ट्रीय शिक्षा आयागे जिसको कोठारी कमीशन के नाम से पुकारा जाता है ने ''शिक्षा और राष्ट्रीय विकास'' – नामक रिपार्ट में लिखा कि भारत का भविष्य बालकों की कक्षाओं में बनाया जा रहा है। यदि गम्भीर रूप से सोचा जाए तो यह उक्ति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वास्तव में भारत का भविष्य क्या होगा यह इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चे अपनी कक्षाओं में किस प्रकार से और किस प्रकार का अध्ययन करते है। शिक्षा मनुष्य को सभ्य बनाने वाली कला है। इसे प्राप्त करके व्यक्ति एक सफल और व्यवस्थित जीवन व्यतीत करता है और प्रतिक्षण कुछ न कुछ सीखने का प्रयत्न करता रहता है। शिक्षा जीवन को दिशा प्रदान करने वाली है और यह जीवन का ही लक्ष्य है। प्रो० डी०वी० के अनुसार ''शिक्षा जीवन है अर्थात् जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य अपने जीवन में जो भी वृद्धि करता है, जिन–जिन पहलूओं का विकास करता है वह सब शिक्षा से ही सम्भव है। शिक्षा को ही आधार बनाकर व्यक्ति अपने जीवन को एक दिशा प्रदान करता है। शिक्षा की अविनाशी सम्पति है शिक्षा के समक्ष अन्य सब कुछ तुच्छ है।''

शिक्षा के उद्देश्य

उद्देश्य एक पूर्व निर्धारित लक्ष्य है, जो किसी कार्य को संचालित करता है अथवा व्यवहार को प्रेरित करता है। मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष तथा दैनिक जीवन की प्रत्येक क्रिया को सफल बनाने के लिए उद्देश्य का विशेष महत्त्व होता है। बिना उद्देश्य के हम जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते।

विशिष्ट उद्देश्य : विशिष्ट उद्देश्यों को असामान्य उद्देश्यों की संज्ञा दी जाती है। इन उद्देश्यों का क्षत्रे तथा प्रकृति सीमित होती है। ये उद्देश्य लचीले, अनुकूलन योग्य तथा परिवर्तनशील होते है। शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्य देश, काल तथा परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं।

सार्वभौमिक उद्देश्य : सार्वभौमिक उद्देश्य मानव जाति पर सामान्य रूप से लागू होते हैं। इन उद्देश्यों का तात्पर्य व्यक्ति में वांछित गुणों का विकास करना है। मानव के व्यक्तित्व का संगठन, उचित शारीरिक तथा मानसिक विकास, समाज की प्रगति, प्रेम, अंहिसा आदि शिक्षा के कुछ ऐसे सार्वभौमिक उद्देश्य है, जो शिक्षा को सार्वभौमिक रूप प्रदान करते हैं।

वैयक्तिक उद्देश्य : संकीर्ण भाव से शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य को 'आत्म–अभिव्यक्ति', 'बच्चे की शक्तियों का सर्वांगीण विकास' और 'प्राकृतिक विकास' आदि संज्ञाएँ दी गई हैं। विस्तृत भाव से शिक्षा के वैयक्तिक विकास को 'आत्म–अनुभव' कहा जा सकता है। इस अर्थ के अनुसार बच्चे की आवश्यकताओं, रूचियों तथा योग्यताओं को सम्मुख रखते हुए बच्चे को वे सब अवसर प्रदान किए जाए जो उसे अपनी सभी शक्तियों को विकसित करने में सहायता दे और उसे उतम व्यक्ति बनाए।

सामाजिक उद्देश्य : सामाजिक उद्देश्य के समर्थक इस बात में विश्वास रखते हैं कि समाज का व्यक्ति से अधिक महत्त्व है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसके व्यक्तित्व का विकास केवल समाज में हो सकता है वह समाज में रहते हुए अपने परिवार, सम्बन्धियों, पड़ोसियों तथा मित्रों के साथ सम्पर्क द्वारा समाजीकरण प्राप्त करता है और इन सम्पर्को से अपनी भौतिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं पूरी करता है। वह समाज के बिना जीवित नहीं रह सकता।

व्यक्ति को प्रजातांत्रिक समाज के लिए सामाजिक तौर पर योग्य बनाना है। शिक्षा के अर्थ के उपरोक्त विश्लेषण करने के पश्चात अब यह प्रश्न उठता है कि व्यक्ति किन–किन प्रकार की अनुभूति जीवन में प्राप्त करते है। यदि हम समाहित रूप से देखें तो जीवन को किसी भी भांति अनुभूतियों से विभाजित नहीं कर सकते। परन्तु यदि दूसरी ओर ये भी सम्भव प्रतीत नहीं होता कि प्रत्येक व्यक्ति सभी प्रकार की अनुभूतियों को प्राप्त करता है। जब हम बच्चें के मनोविज्ञान की ओर ध्यान देते है तो हमें पता चलता है कि बच्चें में व्यक्तिगत विभिन्नताएं होती है। ये व्यक्तिगत विभिन्नताएं स्पष्ट करती है कि अधिगम के लिए प्रत्येक बालक प्रत्येक प्रकार की अनुभूति प्राप्त नहीं कर सकता। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि कुछ बालक प्रत्येक प्रकार की अनुभूतियां सरलता से प्राप्त कर सकते है, अन्य नहीं। उदाहरण के लिए शोध में यह अनुभव किया कि कुछ बच्चे अंग्रेजी में प्रखर बुद्धि के होते है, कुछ गणित में, कुछ विज्ञान में। शिक्षा ग्रहण करते हुए विभिन्न बालकों की विभिन्न विषयों के प्रति विभिन्न रूचियां होती है। बच्चा उस विषय को पढ़ने में आनन्द प्राप्त करता है जो विषय उसकी रूचि के अनुसार होता है और वह उसमें सफलता भी प्राप्त करता है।

शैक्षिक रूचि

शैक्षिक रूचि से अभिप्राय शिक्षा से है अर्थात् बच्चा किस किस विषय में अधिक रूचि रखता है और किस–किस विषय में कम रूचि रखता है। यह रूचि बच्चों के भविष्य को उन्नति की दिशा दने में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। जैसे – एक बच्चा हिन्दी विषय या भूगोल विषय को अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक रूचि से पढ़ता है तो सम्भव है वह आगे चलकर एक महान् भू–वैज्ञानिक या महान साहित्यकार बने। शिक्षा कुछ निश्चित उद्देश्यों को सामने रखकर दी जाती है। इन उद्देश्यों को स्पष्ट रूप में समझ लेने पर हम

शैक्षिक रूचि और शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक रूचि के द्वारा शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। यदि कोई विद्यार्थी किसी विषय में रूचि नहीं रखता तो वह उसे ढंग से नहीं पढ़ पाता है। अधिगम के क्षेत्र में बहुत शोधकार्य हुए है जो स्पष्ट करते है कि प्रभावी अधिगम से बच्चों को रूचियों के विरूद्ध नहीं किया जा सकता। कई बार विद्यार्थी मानसिक रूप से सक्षम होने के बाद भी असफल हो जाता है। इसका कारण उसके विषय का उसकी रूचि के अनुसार न होना है। शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अन्य कारण भी है। यदि शैक्षिक रूचि पर ध्यान दिया जाए तो बच्चे के विकास संबंधी सभी समस्याओं का अन्त किया जा सकता है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति और विकास के लिए बच्चे की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना आवश्यक है।

सी०बी० गुड ने सम्बन्धित अध्ययन का महत्त्व बताते हुए कहा है कि प्रत्येक शिक्षाविद अध्यापक, प्रशासन, शोधकर्ता या छात्रों का शिक्षा के क्षेत्र में अधिक से अधिक नवीन सूचनाओं का ज्ञान आवश्यक होता है। किसी भी क्षेत्र का साहित्य उसकी आधारशिला होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण नहीं करते तो हमारा कार्य प्रभावहीन तथा महत्त्वहीन होने की सम्भावना है। अतः शिक्षा के जिज्ञासु व्यक्तियों व अनुसंधानकर्ता

के लिए यह आवश्यक है कि अपने क्षेत्र के विषय से सम्बन्धित विषयों पर अतीत के शोध कार्यो और वर्तमान में होने वाले कार्यो का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इस बात को ध्यान में रखकर शोधकर्त्री ने कुछ अपने विषय से सम्बन्धित अन्य शोध कार्यो का अवलोकन किया।

शोध के उद्देश्य

1. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन समस्या का निर्माण करने में विचार, व्याख्या और महत्त्वपूर्ण, परिकल्पनाएं प्रदान करता है।
2. यह अध्ययन अनुसंधानकर्ता की सृजनशक्ति व ज्ञान में वृद्धि करता है।
3. तुलनात्मक आंकड़ों को एकत्रित करने व उसके विश्लेषण में सहायता मिलती है।
4. इसमें शोधकर्ता मार्गदर्शन से नहीं भटकता बल्कि तीव्रता से प्रगति करता है।
5. किये गये कार्यो का वर्गीकरण करने में सहायता मिलती है।
6. समस्या के आलोचनात्मक क्षेत्र को विकसित करने तथा शोधकार्य के उद्देश्य को ऊपर उठाने में सहायता मिलती है।

पहले हुए शोध के अध्ययन में पाया गया की समय के अनुसार बच्चे की रूचि में परिवर्तन आ जाता है। किशोर अवस्था आने पर रूचि में स्थायित्व आना शुरू हो जाता है। सामाजिक वातावरण भी रूचि के बदलने व रूचि लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आर्थिक परिवर्तन के कारण भी ज्यादातर रूचि में परिवर्तन पाया गया है। उदाहरण के लिए एक मजदूर का बच्चा कम्प्यूटर इंजीनियर बनना चाहता है लेकिन ज्यादा फीस की वजह से वह अपनी रूचि बदल लेता है। शैक्षिक रूचि होने पर बच्चा सुविधाओं के अभाव में भी सफलता हासिल कर सकता है।

निष्कर्ष एंव सुझाव

बच्चे की शैक्षिक अभिरूचियां उनके भावी जीवन को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करती है। इस अध्ययन से यह सिद्ध हो चुका है कि बच्चों को उन्हीं विषयों को लेने के लिए मार्ग दर्शन करना चाहिए जिनमें उनकी नैसर्गिक अभिरूचि हो। जब विद्यार्थी किसी विषय को अपनी रूचि से पढते हैं तो उसमें आनन्द का अनुभव करते है। अतः सभी विषयों के प्रति ग्रामीण छात्रा एवं ग्रामीण छात्राओं की रूचि है। तकनीकी युग के कारण सरकार के प्रयासों के कारण अब ग्रामीण किशोरावस्था के बच्चे शिक्षा के प्रति जागरूक हो रहे है।

- ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्ध रखने वाले विद्यार्थी ज्यादातर कृषि में रुचि लेते है। लेकिन शोधकर्त्री ने अपने शोध से पता लगाया है कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्रा व छात्राओं में कृषि के क्षेत्र में रुचि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। छात्राएं कृषि में छात्रों की अपेक्षा कम रुचि लेती है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में वर्तमान समय में वाणिज्य के क्षेत्र में काफी रुचि पाई जाती है। छात्रों के मुकाबले में छात्राएं भी सिर्फ हिसाब–किताब तक सीमित नहीं रहना चाहती है। वे भी अर्थशास्त्री, बैकिंग, बीमा, व्यापार आदि विभिन्न क्षेत्रों में आगे आना चाहती है। फिर भी छात्रा व छात्राओं में वाणिज्य के क्षेत्र में सार्थक अन्तर पाया गया है।
- यादातर छात्राएं गृह विज्ञान में रुचि लेती है। क्योंकि यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि गृह विज्ञान भविष्य में अच्छी गृहिणी बनने में सहायता करता है। अतः छात्रों की अपेक्षा छात्राएं गृह विज्ञान में ज्यादा रुचि लेती है। लेकिन वर्तमान समय में छात्रा की गृह विज्ञान में रुचि दिखाने लगे है। अतः छात्रा व छात्राओं में गृह विज्ञान की रुचि छात्राओं में ज्यादा पाई गई है।
- ह्यूमन्नीटिज के क्षेत्र में छात्रों की रुचि छात्राओं से अधिक होती है। होमोनीटीज में विभिन्न विषय होते है। दर्शन, समाजशास्त्र, साहित्य, सिफाई, कढ़ा ई, खिलौने बनाना आदि विषय होते है। इनमें छात्रा व छात्राओं की रूचि अलग–अलग होती है। लेकिन छात्रों की रुचि ज्यादा पाई गई है।
- ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में से साईस के क्षेत्र में ज्यादा रुचि छात्रा लेते हैं। लड़कियां कम रुचि लेती है। स्वभाव के कारण भी छात्राएं सांईस में कम रूचि लेती है। क्योंकि इसमें भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान विषय होते है। जीव विज्ञान में छात्राओं की रुचि कम होती है।
- तकनीकी शिक्षा में वर्तमान समय में विद्यार्थियों की रूचि लगभग समान सी पाई गई है। तकनीकी शिक्षा वर्तमान की मांग है। छात्रा हो या छात्राएं सभी तकनीकी शिक्षा पाना चाहते है। लेकिन फिर भी ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में कम रूचि पाई गई है।
- फाईन आर्टस में ऐसे विषय हाते है। जिसमें छात्रा व छात्राएं लगभग एक जैसी रुचि लेती है। जैसे संगीत, गायन, मूर्तिकला, काष्ठकला आदि है। शोधकर्त्री ने अपने शोध में पता लगाया है कि इस क्षेत्र में छात्राएं ज्यादा रुचि लेती है। छात्रों की रुचि कम पाई गई है।

ऊपर वर्णित सभी क्षेत्रों में छात्रा व छात्राओं की रुचि का पता लगाया गया है। लेकिन कई बार बच्चे की रुचि में बदलाव आ जाता है। जिनके परिणामस्वरूप बच्चा अपनी रूचि अनुसार क्षेत्र का चयन नहीं कर पाता है। जैसे एक गरीब मजदूर का बच्चा आर्थिक परिस्थितियों के कारण डाक्टर नहीं बन सकता है।

इन निष्कर्षो को देखने से प्रतीत होता है कि वास्तव में ग्रामीण क्षेत्र के छात्रा एवं छात्राओं की शैक्षिक रूचि में कोई खास अन्तर नहीं है। इसका शैक्षिक प्रभाव यह पड़ता है कि शिक्षाक्रम बनाते समय शिक्षा शास्त्रियों और शिक्षा प्रबन्धकों को सोचने पर मजबूर कर सकता है कि बच्चों के लिए ऐसे विषयों का प्रबन्ध करना चाहिए जिसके प्रति उनकी रूचि है। ऐसा देखा गया है कि कुछ माता–पिता अपने बच्चों में अन्तर करते हैं। लड़कियों को उनकी रूचि के अनुसार शिक्षा नहीं दिलवाते। होशियार छात्राएं भी नहीं पढ़ पाती। बच्चों की रूचि के अनुसार शिक्षा प्राप्ति में सफलता नहीं मिलती जैसे कि होशियार बच्चे जिनकी रूचि विज्ञान विषयों में ज्यादा होती है। अपने घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण नहीं ले पाते।

इस अध्ययन में यह शैक्षिक प्रभाव पड़ता है कि बच्चे ज्यादातर व्यवसाय सम्बन्धी विषय लते हैं और शिक्षाक्रम के सम्बन्ध में व्यवसाय में सहायता मिलती है। महाविद्यालय पास करने के पश्चात् वे प्रशिक्षण पास करना ज्यादा जरूरी समझते हैं। उनको वोकेशनल शिक्षा की ज्यादा जरूरत होती है। इस सन्दर्भ में यह बात जानना बहुत जरूरी है कि लड़के व लड़कियों की अभिरूचियों में भिन्नता का पाया जाना काफी सामान्य है तो ऐसी अवस्था में उनके समीपस्थ विद्यालयों में उनकी रूचि के अनुसार विषयों का प्रबन्ध अनिवार्य है।

अध्ययन को वैज्ञानिकता प्रदान करने के लिए न्यादर्श को बड़ा किया जा सकता है। तथ्य व परिणामों की वैधता बढ़ाई जा सकती है। इसके अतिरिक्त कुछ और भी कारक अध्ययन के साथ जाड़े जा सकते हैं। इन सबको और ध्यान देते हुए निम्न सुझाव दिये गए है –

- शोधकर्त्री ने केवल ग्रामीण विद्यार्थियों पर ही अपना शोध किया है। यह शोध ग्रामीण एवं शहरी दोनों विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।

- यह अध्ययन विभिन्न उम्र के स्त्राी व पुरुषों में शैक्षिक रूचि जानने के लिए भी किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों की बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर व अध्ययन की आदतों के सम्बन्ध में अध्ययन किया जा सकता है।
- यह अध्ययन विद्यार्थियों के पिछली कक्षा में प्राप्त अंकों के आधार पर कमजोर व होशियार बच्चों की शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- यह अध्ययन महाविद्यालयों के छात्रा एवं छात्राओं या प्राईमरी स्कूलों के बच्चों को लेकर भी यह अध्ययन किया जा सकता है।
- शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में कालेज जाने वाले लड़कों में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- यह अध्ययन शैक्षिक रूचि जानने के अतिरिक्त अन्य क्षेत्र में रूचि जानने के लिए भी किया जा सकता है।
- बहुत से लड़के सर्वाधिक रुचि ह्यूमन्निटिज, कृषि और वाणिज्य विषयों में रखते है। कला, विज्ञान, तकनीकी शिक्षा आदि विषयों में ज्यादा रुचि लेते हैं।
- बहुत से विद्यार्थी अपने शैक्षिक उद्देश्यों के लिए पुस्तके खरीदते है।
- बहुत से हाई स्कूल के विद्यार्थी कला में रूचि रखते है। वे अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र और गृह विज्ञान में रुचि रखते है।
- बहुत से वाणिज्य के विद्यार्थी जैसे मनी बैंकिग लेखक, बही खाता और होटल प्रबन्धन की पुस्तकें पढ़ने में रुचि रखते है।
- लड़कियाँ ज्यादातर गृहविज्ञान, कला तथा फाईन आर्टस के विषय में रुचि रखती है जसै – कला, साज–सज्जा शास्त्र, वस्त्राकला, पेटिंग, नूतन कला, संगीत कला इत्यादि।
- बहुत से हाई स्कूल के विद्यार्थी जिस अध्यापक के पसंद करते है। उसी का भाषण सुनना पसंद करते है और उसी के विषय में रुचि रखते है।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, बी.के. (1958), ''बेसिक स्कूल के सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि का अध्ययन'', एम.एड. शोध, लेडी ईरविन कॉलेज, नई दिल्ली।
2. केर्टर, बी.गुड, ए.एस. बार और डी.ई. स्केटस, ''फेक्टर रिलेटिड टू वोकेशनल इन्ट्रस्ट साइक्लोजिकल बुलेटिन,'' 41 : 131–157.
3. कोल, लोकेश (2008), ''शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली'', फीफथ रिप्रिन्ट, विकास पब्लिशिंग हाउस।
4. कुमार के. (1965), ''स्टडी ऑफ वोकेशनल इन्ट्रस्ट प्रोजेक्ट प्रफरेंस एण्ड एटीटयूड ऑफ रूरल यूथ फारवर्ड क्लब वर्क,'' पी.एच.डी. शोध, आइ.ए.आर.जे., नई दिल्ली।
5. गेरेट, एच.ई. (1955), ''मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी'', लोंगमैन ग्रीन एण्ड को. न्यूयार्क।
6. गिलफोर्ड जे.पी. फान्डामेन्टल स्टेटिस्टिकल इन साईकोलोजी एण्ड एजुकेशन, चाथै ा संस्करण, मैक ग्राहेल बुक।
7. डॉ. शुक्ल एण्ड सहार्य (2003), ''सांख्यिकी के सिद्धान्त'', साहित्य भवन, हॉस्पिटल राडे, आगरा–28
8. घोष, वी.एस. (1967), ''स्कूल जाने वाले किशोरों की रूचि और इच्छा का अध्ययन'', एम.एस.सी. शोध आई.ए.आर.जे., नई दिल्ली।
9. दुबे, रामाकान्त (1982), ''शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन के मूल आधार'', राजेश पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
10. डीचेन्ट, वी.ई. मोरलैंड, ''इम्प्रूविंग द टीचिंग आ्फ वर्क''।
11. पाल, एस.के. (1968), ''गाइडेन्स इनमैनी एण्डस एजुकेशनल वोकेशनल एण्ड पर्सनल सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद।
12. प्रसाद, सी. और बी. डब्ल्यू क्रेइलो (1965), ''इन्ट्रस्ट एरिया ऑफ रूरल यूथ क्लब मेम्बर एस कम्प्रेड टू नानमेमबर इन विसकानसिन रूरल कम्यूनिटीस,'' इंडियन जे.ई.एजु. 1;3), 200–204
13. मंगल, एस.के. (2002), ''आधुनिक शैक्षिक मनोविज्ञान''।
14. लिने, रिचक, ''मारग्रेट एंड रिडिंग प्राब्लम,'' प्रेन्टाइस हाल इन, एग्लबुड, सी.एल.आई., एफ.एफ.एस., एन.जे., 07632.
15. विलकन्सन टी.एस. (1969), ''टी.एस. मेथडोलोजी एण्ड टेकनिक आफ साशे ाल
16. रिसर्च,'' पी.एल. भण्डारकर, हिमालय पब्लिशिंग हाऊस, बोम्बे।
17. शुक्ला, ओ.पी. (2002), ''शैक्षिक मनोविज्ञान और सांख्यिकी'', फस्ट एजुकेशन, भारत पब्लिशिंग।
18. साइडन के.जी., ''समस्याएट्ट और शिक्षा पुर्ननिर्माण''।
19. सुलिवन, रितु सी. (1968), ''इन्ट्रस्ट आफ 10–12 इयर्स ओल्ड बोएस एण्ड गर्ल्स इम्पलिकेशन ऱ्फार 4–एच प्रोग्राम ए कंटेन्ट थ्यूरी,'' एग्री. और एक्स्ट एजु., छव 1, 29–40, 1956.